

ग्रामीण विद्यालयों में आत्मनिर्भर भारत और कौशल विकास योजनाओं को बढ़ावा देने
के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत व्यावसायिक पाठ्यक्रमों एवं नवीन
शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन

**Study of Vocational Courses and Innovative Teaching Methods under National
Education Policy-2020 to Promote Atmanirbhar Bharat and Skill Development Schemes
in Rural Schools**

डॉ. शवनम कुमारी

Dr. Shavnam Kumari

Department of Education
MKM College of Education, Hodal, Palwal

shavanamdei.ac.in2005@gmail.com

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22860628>

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान के साथ कौशल, व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, डिजिटल दक्षता और उद्यमिता को विशेष महत्व दिया है। ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों को स्थानीय कौशल, कला, शिल्प, संस्कृति तथा आधुनिक डिजिटल तकनीक से जोड़ना आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण विद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत व्यावसायिक पाठ्यक्रमों एवं नवीन शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन की संभावनाओं तथा विद्यार्थियों और शिक्षकों की कौशल विकास एवं आत्मनिर्भर भारत संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना है। अध्ययन का क्षेत्र फिरोजाबाद जिला, उत्तर प्रदेश है। अध्ययन में कक्षा 6 से 12 तक के कुल 503 विद्यार्थी, जिनमें 296 छात्र एवं 207 छात्राएँ शामिल हैं, के नामांकन संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं का वर्णनात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण किया गया। उपलब्ध परिणामों से संकेत मिलता है कि कौशल-आधारित एवं व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों में रोजगार क्षमता, स्वरोजगार, उद्यमिता तथा आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करने में सहायक हो सकती है।

Abstract

The National Education Policy-2020 has accorded special importance to skills, vocational education, experiential learning, digital proficiency, and entrepreneurship-alongside knowledge-within the Indian education system. Connecting students in rural schools with local skills, arts, crafts, and culture, as well as modern digital technology, could prove to be a significant step towards an 'Atmanirbhar Bharat' (Self-Reliant India). The objective of the present study is to examine the prospects of implementing vocational courses and innovative teaching methods in rural schools under the National Education Policy (NEP) 2020, as well as to assess the awareness among students and teachers regarding skill development and the 'Atmanirbhar Bharat' (Self-Reliant India) initiative. The study is conducted in the Firozabad district of Uttar Pradesh. The study analyzed enrollment data for a total of 503 students-comprising 296 boys and 207 girls-across grades 6 to 12. It involved a descriptive and quantitative analysis of information gathered through questionnaires, interviews,

and observations. The findings indicate that skill-based and vocational education can help foster employability, self-employment, entrepreneurship, and a sense of self-reliance among students.

मुख्यशब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भर भारत, ग्रामीण विद्यालय, डिजिटल शिक्षा, उद्यमिता, नवीन शिक्षण पद्धति।

Key words: National Education Policy 2020, vocational education, skill development, Atmanirbhar Bharat (Self-Reliant India), rural schools, digital education, entrepreneurship, innovative teaching methods.

परिचय

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें जीवन एवं कार्य-जगत की वास्तविक आवश्यकताओं के लिए तैयार करना भी है। वैश्वीकरण, डिजिटल परिवर्तन और रोजगार के बदलते स्वरूप ने विद्यालयी शिक्षा में कौशल एवं व्यावसायिक दक्षताओं के समावेश को आवश्यक बना दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख बनाने पर बल देती है। नीति में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने, अनुभवात्मक अधिगम, स्थानीय ज्ञान एवं कौशल तथा तकनीकी दक्षताओं को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय कला, शिल्प, कृषि, पारंपरिक व्यवसाय एवं अन्य संसाधनों की पर्याप्त संभावनाएँ होती हैं। यदि इन संसाधनों को विद्यालयी शिक्षा, डिजिटल तकनीक और बाजार व्यवस्था से जोड़ा जाए, तो विद्यार्थियों के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं। इसी संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा, विद्यार्थियों को केवल रोजगार प्राप्त करने वाला व्यक्ति बनाने के स्थान पर रोजगार एवं उद्यमिता सृजित करने वाला सक्षम नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को स्थानीय एवं व्यावहारिक कौशलों से जोड़ने की आवश्यकता है। पारंपरिक ज्ञान एवं कौशल को आधुनिक डिजिटल तकनीक तथा बाजार से जोड़कर विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सकता है।

इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित है—

- विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करना।
- स्थानीय कला एवं शिल्प को शिक्षा से जोड़ना।
- विद्यार्थियों में उद्यमिता विकसित करना।
- डिजिटल कौशल को बढ़ावा देना।
- आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ना।
- ग्रामीण विद्यार्थियों में स्वरोजगार की संभावनाएँ विकसित करना।
- NEP-2020 के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी उद्देश्यों के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायता करना।

अध्ययन के उद्देश्य

- फिरोजाबाद के ग्रामीण विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों में कौशल विकास के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना।
- शिक्षकों की कौशल-आधारित शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- नवीन एवं अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियों की उपयोगिता का अध्ययन करना।
- डिजिटल तकनीक एवं कौशल विकास के संबंध का अध्ययन करना।
- ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए कौशल एवं उद्यमिता आधारित शिक्षा का प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

- ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थी कौशल विकास के प्रति कितने जागरूक हैं?
- विद्यार्थी आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को किस प्रकार समझते हैं?
- क्या कौशल-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता बढ़ा सकती है?
- ग्रामीण विद्यालयों में डिजिटल तकनीक कौशल विकास में किस प्रकार सहायक हो सकती है?
- स्थानीय कला एवं कौशल को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने की क्या संभावनाएँ हैं?

शोध विधि

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र फिरोजाबाद जिला, उत्तर प्रदेश के ग्रामीण विद्यालय हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

स्वनिर्मित प्रश्नावली
साक्षात्कार
अवलोकन

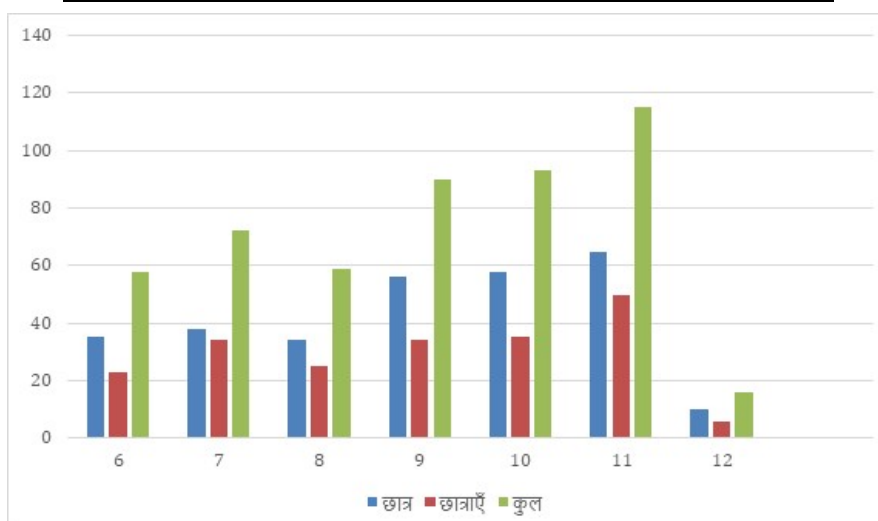
विद्यालयी नामांकन संबंधी आँकड़े

प्राप्त आँकड़ों का वर्णनात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण किया गया।

विद्यार्थियों का नामांकन विवरण

अध्ययन में कक्षा 6 से 12 तक कुल 503 विद्यार्थियों के नामांकन आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

कक्षा	छात्र	छात्राएँ	कुल
6	35	23	58
7	38	34	72
8	34	25	59
9	56	34	90
10	58	35	93
11	65	50	115
12	10	6	16
कुल	296	207	503



नामांकन आँकड़े

ऑकड़ों की व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि कक्षा 6 से 12 तक कुल 503 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इनमें 296 छात्र तथा 207 छात्राएँ हैं। कक्षा 11 में विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक 115 है, जबकि कक्षा 12 में सबसे कम 16 विद्यार्थी हैं।

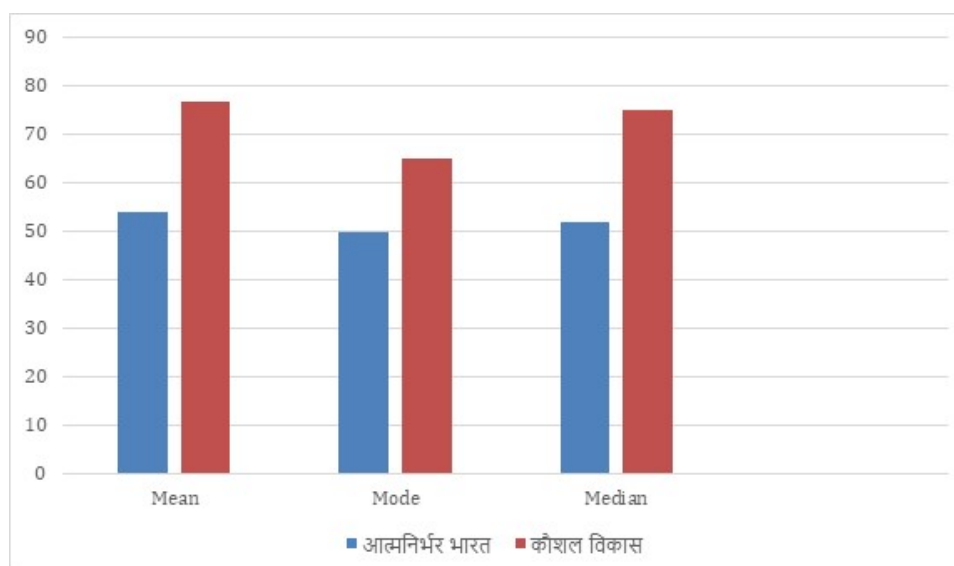
कुल नामांकन में छात्रों की संख्या छात्राओं की तुलना में अधिक है। यह ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन की स्थिति को दर्शाता है।

कौशल विकास एवं आत्मनिर्भर भारत के प्रति जागरूकता

शोध अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में कौशल विकास तथा आत्मनिर्भर भारत की

छात्रों के जागरूकता स्कोर

सांख्यिकीय माप	आत्मनिर्भर भारत	कौशल विकास
Mean	53.90	76.72
Mode	50	65
Median	52	75



सांख्यिकीय मापों और छात्रों के जागरूकता स्कोर में मध्य आलेख

व्याख्या

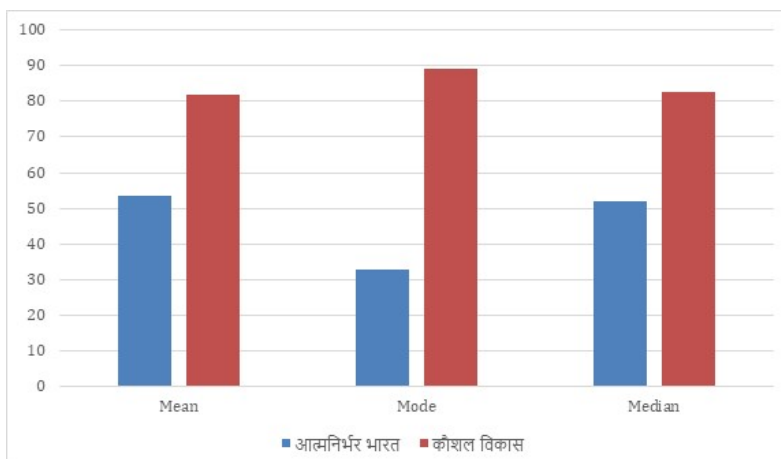
छात्रों के कौशल विकास का औसत स्कोर 76.72 है, जबकि आत्मनिर्भर भारत का औसत स्कोर 53.90

अवधारणा के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया। उपलब्ध प्रतिक्रियाओं के अनुसार लगभग 70% शिक्षकों ने माना कि व्यावसायिक एवं कौशल-आधारित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने में उपयोगी हैं। लगभग 65% विद्यार्थियों ने कौशल-आधारित शिक्षा को अधिक उपयोगी माना। यह परिणाम दर्शाता है कि विद्यालयी शिक्षा में कौशल एवं व्यावसायिक गतिविधियों को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल करने की आवश्यकता है।

है। इससे संकेत मिलता है कि अध्ययन में शामिल छात्रों में कौशल विकास की अवधारणा के प्रति अपेक्षाकृत अधिक जागरूकता दिखाई देती है।

छात्राओं के जागरूकता स्कोर

सांख्यिकीय माप	आत्मनिर्भर भारत	कौशल विकास
Mean	53.65	82.04
Mode	33	89
Median	52	82.52



सांख्यिकीय मापों और छात्राओं के जागरूकता स्कोर में मध्य आलेख

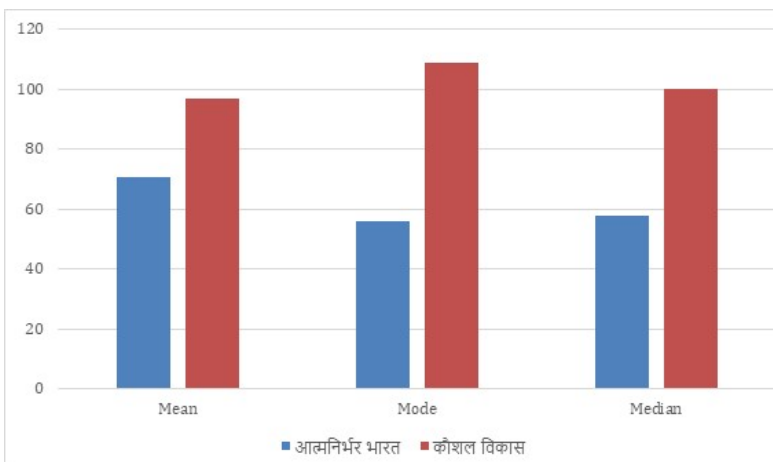
व्याख्या

छात्राओं में कौशल विकास का औसत स्कोर 82.04 तथा आत्मनिर्भर भारत का औसत स्कोर 53.65

पाया गया। इससे पता चलता है कि छात्राओं में कौशल विकास संबंधी जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक है।

पुरुष शिक्षकों का जागरूकता स्कोर

सांख्यिकीय माप	आत्मनिर्भर भारत	कौशल विकास
Mean	70.80	97.07
Mode	56	109
Median	58	100



सांख्यिकीय मापों और पुरुष शिक्षकों के जागरूकता स्कोर में मध्य आलेख

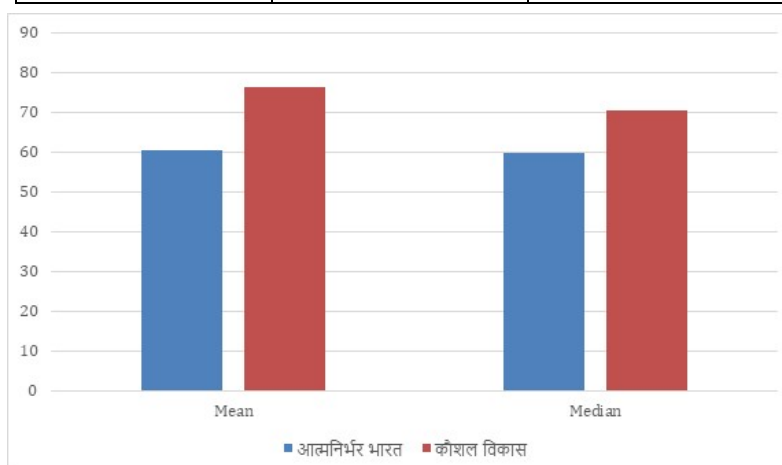
व्याख्या

पुरुष शिक्षकों में कौशल विकास का औसत स्कोर

97.07 तथा आत्मनिर्भर भारत का औसत स्कोर 70.80 पाया गया। इससे कौशल विकास संबंधी जागरूकता का अपेक्षाकृत उच्च स्तर दिखाई देता है।

महिला शिक्षकों के जागरूकता स्कोर

सांख्यिकीय माप	आत्मनिर्भर भारत	कौशल विकास
Mean	60.43	76.50
Median	60.00	70.50



सांख्यिकीय मापों और महिला शिक्षकों के जागरूकता स्कोर में मध्य आलेख

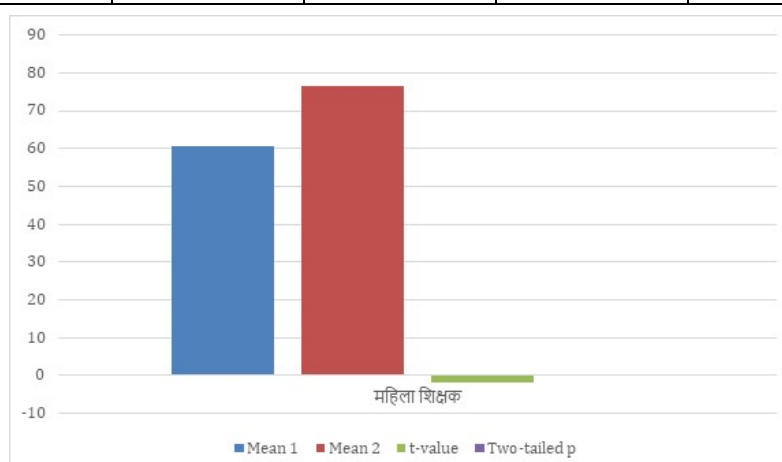
व्याख्या

महिला शिक्षकों में कौशल विकास का औसत स्कोर 76.50 तथा आत्मनिर्भर भारत का औसत स्कोर

60.43 है। अतः वर्णनात्मक स्तर पर कौशल विकास के प्रति जागरूकता अधिक दिखाई देती है।

t-Test का विश्लेषण

समूह	Mean 1	Mean 2	T-value	Two-tailed p
महिला शिक्षक	60.43	76.50	-1.889	0.070



व्याख्या

प्राप्त t-value -1.889 तथा two-tailed p-value 0.070 है। 0.05 के स्तर पर p-value 0.05 से अधिक है। इसलिए दोनों औसतों के बीच अंतर को 5% स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं माना जाता।

अतः शून्य परिकल्पना को 5% स्तर पर अस्वीकार नहीं किया जाता। हालांकि, वर्णनात्मक रूप से कौशल विकास का औसत स्कोर आत्मनिर्भर भारत से अधिक है।

नवीन शिक्षण पद्धतियों की भूमिका

ग्रामीण विद्यालयों में कौशल विकास को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित पद्धतियाँ उपयोगी हो सकती हैं—

अनुभवात्मक अधिगम

विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में कार्य करके सीखने के अवसर प्रदान किए जाएँ।

परियोजना आधारित अधिगम

स्थानीय व्यवसाय, कला, कृषि, शिल्प या सामाजिक समस्याओं पर परियोजनाएँ कराई जाएँ।

Learning by Doing

विद्यार्थियों को स्वयं कार्य करके सीखने के अवसर दिए जाएँ।

डिजिटल शिक्षण

Canva, डिजिटल पोस्टर, वीडियो, प्रस्तुतीकरण, डिजिटल मार्केटिंग एवं ई-कॉमर्स संबंधी प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

सहयोगात्मक अधिगम

विद्यार्थियों को समूहों में उत्पाद निर्माण, समस्या समाधान एवं प्रस्तुतीकरण की गतिविधियाँ कराई जाएँ।

प्रस्तावित कौशल एवं आत्मनिर्भरता मॉडल

Learn → Do → Create → Market → Earn

विद्यालयी ज्ञान



स्थानीय कौशल की पहचान



Hands-on / Experiential Learning



डिजिटल कौशल प्रशिक्षण



उत्पाद/सेवा निर्माण



डिजिटल मार्केटिंग एवं विपणन



उद्यमिता



रोजगार/स्वरोजगार



आत्मनिर्भर भारत

यह मॉडल विद्यार्थियों को ज्ञान से कौशल, कौशल से उत्पाद एवं उत्पाद से रोजगार/स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण विद्यालयों में कौशल-आधारित शिक्षा की पर्याप्त आवश्यकता है। विद्यार्थियों में कौशल विकास के प्रति सकारात्मक जागरूकता दिखाई देती है। शिक्षकों द्वारा व्यावसायिक शिक्षा को रोजगार क्षमता से जोड़ने की उपयोगिता स्वीकार की गई। कौशल शिक्षा विद्यार्थियों को रोजगार के साथ स्वरोजगार की दिशा में भी तैयार कर सकती है। डिजिटल तकनीक कौशल विकास एवं बाजार से जुड़ने में सहायक हो सकती है। स्थानीय कला एवं पारंपरिक कौशल को आधुनिक तकनीक से

जोड़ा जा सकता है। परियोजना-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण व्यावहारिक दक्षताओं के विकास में उपयोगी हो सकता है। विद्यालयों में Skill Lab की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को डिजिटल मार्केटिंग एवं वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कौशल शिक्षा को आत्मनिर्भर भारत एवं उद्यमिता से जोड़ना ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता है।

सुझाव

कक्षा 6 से विद्यार्थियों को कौशल-आधारित गतिविधियों से जोड़ा जाए। विद्यालय स्तर पर स्थानीय Skill Mapping की जाए। Skill Lab विकसित किए जाएँ। स्थानीय कारीगरों एवं उद्यमियों को अतिथि प्रशिक्षक बनाया जाए। विद्यार्थियों को डिजिटल मार्केटिंग एवं ई-कॉमर्स का प्रशिक्षण दिया जाए। वित्तीय साक्षरता को कौशल शिक्षा से जोड़ा जाए। Product Fair एवं कौशल प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाए। ITI, Polytechnic, MSME एवं स्थानीय उद्योगों से सहयोग स्थापित किया जाए। Project एवं Portfolio आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा दिया जाए। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को सरकारी कौशल विकास योजनाओं के प्रति जागरूक किया जाए।

शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन के आधार पर ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं एवं रोजगार के अवसरों से जोड़ने की आवश्यकता है। विद्यालयों में डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता, वित्तीय शिक्षा, स्थानीय कला एवं व्यावसायिक कौशल को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है। शिक्षकों के लिए नियमित कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किए जाने चाहिए ताकि वे विद्यार्थियों को पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक तकनीकी एवं व्यावसायिक दक्षताएँ प्रदान कर सकें।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षा को ज्ञान के साथ कौशल, अनुभव, तकनीक एवं रोजगार से जोड़ने

की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। फिरोजाबाद के ग्रामीण विद्यालयों के 503 विद्यार्थियों के उपलब्ध आँकड़ों एवं अध्ययन परिणामों से यह संकेत मिलता है कि कौशल-आधारित शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा में अधिक प्रभावी ढंग से शामिल करने की आवश्यकता है। स्थानीय कला, शिल्प एवं पारंपरिक कौशल को आधुनिक डिजिटल तकनीक, उद्यमिता एवं बाजार व्यवस्था से जोड़कर ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर विकसित किए जा सकते हैं। Learn → Do → Create → Market → Earn मॉडल इस दिशा में एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने से आगे बढ़कर कौशल का प्रयोग, उत्पाद निर्माण, विपणन तथा आय अर्जन की प्रक्रिया को समझ सकते हैं। इस प्रकार व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल दक्षता, स्थानीय ज्ञान एवं उद्यमिता को एकीकृत करके ग्रामीण विद्यालय आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ

1. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
2. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020: Transforming Education.
3. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Government of India. Skill India Mission.
4. Government of India. Aatmanirbhar Bharat Abhiyan.
5. NCERT. Vocational Education and Skill Development Resources. National Council of Educational Research and Training.
6. UNESCO. (2015). Education 2030: Incheon Declaration and Framework for Action. UNESCO.